परमात्म ऊर्जा

अशान्ति के बीच शान्ति की स्थिति बनाने का अभ्यास चाहिए

साइलेन्स की स्थिति में जब चाहो तब स्थित हो सकते हो क्योंकि आपका अनादि स्वरूप ही स्वीट साइलेन्स है। आदि स्वरूप आवाज़ में आने का है लेकिन अनादि अविनाशी संस्कार साइलेन्स के हैं। अनादि संस्कार इमर्ज करने से स्वीट साइलेन्स का अनुभव होगा। चारों तरफ कितना भी वातावरण हलचल वाला हो लेकिन आवाज़ में रहते आवाज़ से परे की स्थिति का अभ्यास अभी बहुत काल का चाहिए। शान्त वातावरण में शान्ति की स्थिति बनाना यह कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन अशान्ति के बीच आप शान्त में रहो यही अभ्यास चाहिए। चाहे अपनी कमज़ोरियों की हलचल हो, संस्कारों के व्यर्थ संकल्पों की हलचल हो, ऐसी हलचल के समय स्वयं को अचल बना सकते हो कि टाइम लग जाता है? टाइम लगना यह कभी भी धोखा दे सकता है। समाप्ति के समय में ज्यादा समय नहीं मिलना है। फाइनल रिज़ल्ट का पेपर कुछ सेकण्ड और मिनट का ही होना है लेकिन चारों ओर की हलचल के वातावरण में अचल रहने पर नम्बर मिलना है इसलिए यह रूहानी अनादि स्वीट साइलेन्स में रहने की एक्सरसाइज़ का अभ्यास खूब करो तो फाइनल पेपर बहुत सहज ही पास कर पास विद ऑनर हो जाएंगे। पहले से ही बता देते हैं कि यह पेपर आना है लेकिन नम्बर बहुत थोड़े समय में मिलना है। देह, देह के सम्बन्ध, देह के संस्कार, व्यक्ति व वैभव, वायब्रेशन सब होते हुए भी अंत में आकर्षण न करे, इसी को कहते हैं, नष्टोमोहा समर्थ स्वरूप। लोग चिल्लाते रहें और आप अचल रहो। प्रकृति और माया भी सब लास्ट दाँवपेंच लगाने के लिए अपने तरफ कितना भी खींचे लेकिन आप न्यारे और बाप के प्यारे बनने की स्थिति में लवलीन रहो। प्रकृति और माया में भी जितनी शक्ति होगी, वह ट्रायल करेगी। उनकी भी लास्ट ट्रायल और एक तरफ आप की लास्ट कर्मातीत स्थिति और दूसरी तरफ कर्मबंधन स्थिति होगी। दोनों तरफ की बहुत पॉवरफुल सीन होगी। वह भी फुल फोर्स से और यह भी फुल फोर्स से आमना-सामना होगा लेकिन सेकण्ड की विजय, विजय के नगाड़े बजाएगी।

कथा सरिता

अहंकार भी काम का

महाराणा प्रताप ने जंगलों में अपार कष्टों को झेलते हुए एक बार कमज़ोरी का अनुभव किया। वन में बच्चों के लिए बनाई गई घास की रोटी भी जब कोई जानवर उठा ले गया तो मानसिक रूप से वे टूट गए। उस समय उन्होंने स्वयं को बहुत दयनीय स्थिति में पाकर अकबर से संधि कर लेनी चाही। उनके एक भक्त- चारण को इस बात का पता चला तो उसने महाराणा को एक दोहा लिखकर भेजा। उसमें लिखा था कि- इस धरती पर हिन्दू कुलरक्षक एक आप ही थे, जो मुगल बादशाह से लोहा लेते रहे। किसी भी स्थिति में हार नहीं मानी, मस्तक गर्व से सदा ऊँचा रखा।

वह मस्तक अब अकबर के सामने झुकने जा रहा है, तो हम स्वाभिमानी मेवाड़ी किसकी शरण लें? आपका निर्णय हमें इसी तरह आश्चर्यचकित करता है, जैसे सूर्य को पूरब की बजाए पश्चिम में उगते देखने पर होता है। कहते हैं कि उस एक दोहे को पढ़कर महाराणा का स्वाभिमान पुनः जागृत हो गया।

संधि पत्र को फाड़कर फेंक दिया और अपनी शक्ति को फिर से संगठित कर मेवाड़ के शेष भाग को अकबर के अधिकार से मुक्त कराने के प्रयत्न में जुट गए। चारण को धन्यवाद देते हुए लिखकर भेजा कि सूरज जिस दिशा में उगता है, उसी दिशा में ही उगेगा, तुम चिंता मत करो। अहंकार को जगाना कभी-कभी व्यावहारिक जगत में बड़े काम का होता है। लोग किसी प्रसंग में कह देते हैं, इतने बड़े होकर जब आप ही ऐसा काम करेंगे तो किसी अन्य से क्या आशा की जाए! इस बात से आदमी संभल जाता है और कभी अवांछित कार्य नहीं करता।

मृत्यु का भय

एकनाथ के पास एक सेठ आए, बोले-आपका जीवन कितना शान्ति से भरा है। कोई उपाय बताइए, ताकि कभी भी हमें अशान्ति न प्राप्त हो। सदैव आनंद ही आनंद हो। एकनाथ बोले- पहले तो तू अपने आठ दिनों की चिंता कर। तू इतने दिन का ही मेहमान है। इस अवधि में अच्छा जीवन जी ले। उदास मन से वह लौटा तो, पर आते ही वह बदल-सा गया। अपने बुरे व्यवहार के लिए पहले पत्नी से, फिर बच्चों से, फिर मित्रों से क्षमा मांगी। अपने ग्राहकों से भी मिलता रहा। सबसे विनम्र भाव से क्षमा मांगता और प्रभु से निरंतर प्रार्थना करता कि अंत कष्टमय न हो। नौवें दिन वह एकनाथ के पास पहुँचा और पूछा-हे नाथ! आठ दिन तो बीत गए, अब अंतिम घड़ी कब आए? एकनाथ ने पूछा कि यह बता कि तेरे ये आठ दिन कैसे बीते? वह बोला- प्रभु! मुझे मृत्यु के अलावा कुछ भी नहीं दिख रहा था। मुझे मेरे सारे दुष्कर्म याद आए। पश्चाताप ही करता रहा। एकनाथ बोले- तो याद रख! इसी तरह सारी ज़िंदगी जी। हम भी सारा जीवन इसी सोच के साथ जीते हैं। यह देह क्षणभंगुर है। यह याद रखकर परमात्मा का स्मरण करते हुए काम कर। क्या हम भी यह संदेश याद रखकर जी सकते हैं?

माउंट आबू-पांडव भवन(राज.)। ज्ञान चर्चा व मुख्यालय पाण्डव भवन का अवलोकन करने के पश्चात् शान्ति स्तम्भ के सामने समूह चित्र में राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास निगम,सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय,भारत सरकार के जावेद अहमद, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू दीदी, ब्र.कु. शशिकांत तथा अन्य अधिकारीगण।

चीन-गुआंगझौ। 79वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर चीन के गुआंगझौ स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास द्वारा होटल शांगरी-ला में आयोजित भव्य स्वागत समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित ब्र.कु. सपना दीदी, महावाणिज्य दूत शंभू हक्की, ग्वांगझोउ नगर पीपुल्स कांग्रेस की स्थायी समिति के उपाध्यक्ष पेंग रेनी, ग्वांगडोंग प्रांतीय विदेश कार्यालय की उप महानिदेशक झाओ किंग तथा अन्य महावाणिज्य दूत और राजनयिक दल के सदस्यों व ब्रह्माकुमारीज़ परिवार के सदस्यों की उपस्थिति रही।

वाराणसी-सारनाथ(उ.प्र.)। विख्यात कथावाचक स्वामी सुखदेवानंद जी महाराज को सेवाकेन्द्र आगमन पर आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए वाराणसी ज़ोन एवं पश्चिमी नेपाल की निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुरेन्द्र दीदी। साथ हैं राजयोगी ब्र.कु. दीपेन्द्र, ब्र.कु. तापोशी, आनंद पाण्डेय,विश्व हिन्दू परिषद् तथा अन्य।

मोहाली-पंजाब। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित प्राणायाम कार्यक्रम के पश्चात् नक्षत्र डायरेक्टर, प्रो. तुलसा पांडा को ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेमलता दीदी,मोहाली व रूपनगर सर्कल की प्रभारी। साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. रमा दीदी,सह प्रभारी तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

पटना-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ के महेन्द्रू सेवाकेन्द्र व एन.सी.सी. बटालियन29 के तत्वावधान में आयोजित 'राजयोग मेडिटेशन प्रशिक्षण' सत्र के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. अमित मनोज, ब्र.कु. रंजीत रंजन,योगा इंस्ट्रक्टर, एन.सी.सी. 29 बिहार बी.एन. के कमांडिंग ऑफिसर लेफ्टिनेंट कर्नल अमित कुमार, गर्ल्स कैडेट इंस्ट्रक्टर रिंपा राज तथा अन्य।

परबतसर-राज.। राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के 18वें पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित रक्तदान शिविर में उपस्थित रहे दादू पीठाधीश्वर श्री ओमप्रकाश दास जी महाराज, नगर पालिका अध्यक्ष ओमप्रकाश सेन, ब्र.कु. शानू, ब्र.कु. निधि, ब्र.कु. महेश तथा अन्य।

गया-एपी कॉलोनी(बिहार)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित विशाल रक्तदान शिविर का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. प्रतिमा, मगध मेडिकल कॉलेज के अधीक्षक के.के. सिन्हा, डॉ. अभय सिंहा, डॉ. रतन कुमार, डॉ. मानसी, समाजसेवी राजकुमार अग्रवाल तथा अन्य।

फैज़ाबाद-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के 18वें स्मृति दिवस पर आयोजित रक्तदान शिविर के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. शशि,अयोध्या तथा अन्य भाई-बहनें।